

[illegible]

[illegible]

१५४ सिद्धिः सच्चिद्विजयकर्मवृत्त्या कथियमयामा सर्वथागविनिःसृजभा
२५५ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ सत्यं समात्मा समिन् ॥ समं जमाय्यं यन्दरी को क्का
वृषकर्मवृत्त्या कुम्भिका २५६ ॥ उदावमजिना वरु विष्वथानि ॥ मुविगुवाभजम्
न ॥ २५७ ॥ स्वक ॥ स्मृत् ॥ वनापादामलानयाभा २५८ ॥ सवर्ग ॥ सवविहनु विष्वक्
ना कनाईनभवेदाथकविदस्य ॥ वेदाभवेदविल्कविभा २५९ ॥ लोकाव्यक्त
॥ स्मृताव्यक्त ॥ यस्माव्यक्त ॥ कृताकृतम् ॥ वृत्त्यात्मा वरु चक्र ॥ अहं हं ॥ अहं हं
कुम्भा २६० ॥ अजिबु कृतिर्न हाका साहि सुकृगदादिजम् जनया विज्ञया जना
विष्वथानि ॥ यूनवेसुभा २६१ ॥ उद्येन्दावासन ॥ अङ्गु रमाय्य ॥ मुविगुर्हि नम्
जगीन्द ॥ सङ्ग ॥ सङ्ग ॥ वृत्त्यात्मा निष्कामायम्भा २६२ ॥ वेदाभवेद ॥ सदायाग

वाचकामाधवा मधुषा जनीन्द्रियामाहामाया मरुसाहामाहावलभा ॥ ३॥ माहावाहि
 म्माहावाया माहोभक्तिम्माहाशक्तिभजनिर्दयवयुः ॥ ४॥ श्रीमा नमयात्मासाहादिव
 क ॥ ३॥ माहव्यासामहोक्तं लीनिवासं सगंगति ॥ ४॥ अनिपुणं सुपानन्दं गमविन्द
 नेमविद्वान्नि ॥ ३॥ मयीविद्वन्मनाहं स ॥ सत्यं ह्यहं कर्मभक्तिपथनाहं सुग
 या ॥ यद्मनाहं युजायति ॥ १॥ जम्बूक ॥ सर्वदाकिह ॥ सन्तोसविमोक्षिपथ ॥ जे
 द्मवत् ॥ भावा विष्णुतात्मासुपापिह ॥ ३॥ गङ्गुह्युक्तमात्म सत्यं सत्ययनाक
 म ॥ निमित्तानिमित्तं सुग्री वायस्यतिपूजयती ॥ ३॥ जवलीशमली ॥ श्रीमा न्या
 यानतासमावली ॥ सरुसुसुद्धाविष्णुमा सरुसाङ्ग ॥ सरुसयाह ॥ ३॥ आवकनी
 वेवुहात्मा सैवक ॥ सैवकदन ॥ जह ॥ सैवककावकि ननितायेनलीधर ॥ ३॥

॥ ५ ॥ साद ४ युसनात्मा विष्णुश्चैव रुद्रिहम् सत्कलसत्कृतिः साधु रूद्रनाम
 यः शान्तपथा ३० ॥ अस्मिन् यथा युमयात्मा विनिश्चयः निश्चयः कृत्स्नविभक्तिः सिद्धाचः सिद्धि
 संकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनम् ४० ॥ देवाही वृषरुद्रिहम् देवयवो वृषादयम्
 वदनावदमानः विविक्तः गुरुसागपथा ४१ ॥ मरुताद देवावाग्मी महन्ताव
 सदावसुभने कपूया वृद्धयः लियिविष्टः युकागनम् ४२ ॥ उज्जुता कृतिः
 पः युकागनात्मा युतायनम् सुदः स्य दधामन्तु धन्दांशु हास्करादिति ४३ ॥
 अस्मिन् ४४ ॥ रुवाहानुः लालविन्दः सपथपथा उवर्गजगत् ४५ ॥ सन्धेयम्
 याक्रमम् ४६ ॥ हनरुवाहवन्ता ४७ ॥ यवनः यावनात्मा कामहा कामकृत्पन
 ४८ ॥ कामः कामयदः यरुम् ४९ ॥ युगदिकु युगवर्ता नेकमाथा महानम् ५० ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ यमादनम आनन्दानन्दनानन्दः सत्वधर्मो विविक्कमभा १०॥ महर्षिः
विजयायः कुरुक्षेत्रादिनीयनिष्ठः प्रियदस्तिदशायुक्तः महाभूमिः कुरुक्षेत्रं
भाग्यः महावपराहो विरूढः सुखलः कनकाङ्गदीप्तः शोकगहीपांगरुना गद्य
भ्यक्रगदाधरभा ११॥ वैष्णवः स्वामिः कुरुक्षेत्रे दृष्टः सर्ववत्सलः चक्रः वपु
लावापूरुलावृक्षः युस्कपाङ्को महासना १२॥ रुग्वाङ्ग रुग्दानन्दी व
नमाली हवायुधम आदित्याङ्गादि रादित्यः सहिसुर्वैतिसहस्रभा १३॥ सुव
न्वासल्लयपञ्च दर्शूलो धवलियुद्धः दिवस्य क सर्वदृष्ट्या सो वायस्य नि यथा
निष्ठ भा १४॥ त्रिसामो सामगः साम निर्वाङ्गः ईश्वरीहिवकः संन्यासकृतसम
भा नो निष्ठा मानिके ययायलभा १५॥ भुराङ्गः अनिदः सेधा क्रमदः कव

[illegible]

॥ १०८ ॥ सुवर्णं विन्दुः पद्मः स्वः सर्वदा गीः यः यः यः महाद्रुमः महागर्भः महाहृत्
महानिधिः ॥ १०९ ॥ कम्बुः कन्दः कन्दः यज्ञः वावना नयः अमृतसिन्धुः
कवयः सर्वः सर्वः मूर्खः ॥ ११० ॥ सुलः सुवर्णः सिद्धः गुरुः कुरुः कुरुः
भयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः
येषां सफवाहनः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः
॥ १११ ॥ गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः गुणः
॥ ११२ ॥ राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः राजः
सूर्यः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः वायुः
सर्वः सर्वः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः
सर्वः सर्वः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः नियतः

नायलभभारुवायययिवाहोहोयियकृत्यानिवद्वेनभा॥३॥विहायसगतिछाति
॥४॥सुविग्नेरुह्विहभनविर्विलाचन॥सूर्य॥सवितावदिलाचनभा॥५॥जनन
रुहसुम्हाकासखदानिकदागुभा॥जनिर्विलु॥सदामयीलाकाविद्वानमहक
॥६॥सनाक॥सनाकनरुम॥कयिल॥कयिनययभस्वस्ति॥स्वस्तिकृत्यस्ति
॥७॥स्वस्तिकृत्यस्वस्तिकृति॥८॥जुजोय॥कुललीचका॥विक्रम्यक्ति॥सनाम
॥९॥काकिग॥दसह॥गिलिज॥वर्वाकयभा॥१०॥जुजुय॥यगलादन्धा॥दन्दि
कमि॥यवभविद्वलभावीरुहय॥युग्यवदकीरुनभा॥११॥उलाय॥दू॥कुनि
लायु॥दू॥सयुना॥न॥वीरहा॥न॥भाजीवन॥ययवस्ति॥भा॥१२॥
जननकृत्यानन॥किरुमन्कृत्यायह॥वडयभा॥गहा॥भाविदि॥भायादि

॥१३॥जनादि॥रुहवाल्नभा॥सुवाभा॥सुविवाङ्क॥जनना॥जननभादि
॥१४॥रुमा॥रुमय॥वाकमभा॥१५॥जुभा॥वनिलया॥भा॥यु॥भा॥स॥यु॥भा॥कयभा॥जु
ग॥सत्यभा॥वाय॥या॥द॥यु॥व॥य॥भा॥१६॥युमान॥या॥निलय॥या॥द
त्या॥जा॥वन॥रु॥व॥विदका॥भा॥जुममृ॥जुना॥तिगभा॥१७॥रु॥व॥स्व॥सु
स्त॥य॥सविता॥यु॥यिता॥मह॥यि॥य॥यति॥यि॥को॥य॥भा॥य॥सो॥धेन॥भा॥१८॥
य॥रु॥य॥रु॥क॥य॥य॥रु॥य॥रु॥वा॥रु॥न॥य॥रु॥क॥य॥रु॥म॥न॥म॥ना॥क॥म॥य॥च
॥१९॥जुभा॥यानि॥सूर्य॥जा॥वे॥वान॥स॥म॥ग॥य॥न॥द॥व॥की॥न॥न्द॥न॥सु॥धा॥नि॥
॥२०॥या॥य॥ना॥ग॥न॥भा॥११॥न॥ख॥रु॥न॥द॥की॥य॥की॥भा॥रु॥य॥न॥वा॥ग॥का॥य॥य॥य॥भा॥य॥भा॥
ति॥व॥का॥य॥स॥व॥य॥रु॥य॥भा॥१२॥न॥म॥भा॥००॥की॥दी॥की॥नी॥य॥स्य॥क॥ग॥व॥स्य॥

१२८ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

माहात्मनमनामसहस्रीदिव्याना मण्डपदयुक्तीति ॥ १२१ ॥ यच्चैकमुद्रायान्नित्यं च
व्याधियवि कीर्तयन् नानुसूयायुयात्किंकिर यनद्रुचमानवभा ॥ १२२ ॥ वेदान्त
वाक्क ६४ स्या लङ्गिण्याविजया रुवन् ॥ १२३ ॥ वनसमृद्ध ४ स्या बुद्ध ४ सस्वमवायुया
नमः ॥ १२४ ॥ ५ मूर्था वायुयादुम्भमन्त्रोवाचान्मायुयात् कामानवायुयात्कामो व
दोर्वावायुयात्पुजाभा ॥ १२५ ॥ रुक्मिण्य ४ सदाकृत्य सुविस्तृतमानसं सरुसर्व
सूदवस्य नामामरत्युक्तीति ॥ १२६ ॥ यन ४ वायानि विवृतं सुविस्तृतं वायानि मव
च ५ अत्र तांशियमायानि ८ य ४ वायानि नमः ॥ १२७ ॥ नरुयकविदायानि वी
य ४ अत्र विन्दति रुवत्यगागी ५ रुक्मिण्य न वलपुय ममनि ॥ १२८ ॥ वागमर्माय
तथागा दशम्यातवन्नात् रुयात्मेय नरुय मयदाय न वायदभा ॥ १२९ ॥

ASIA ARCHIVES 2979

सिंहाननसूनासूधी॥ यगुरुजाविसानाशी, खजूरुठकधनिही॥
नायनहालकयिना, लहकलधनिगी॥ नतखविगसर्वाही, योडा
मनिविरुषिना, विचीरेपूर्यवेरुय, वनगन्धानुनयना॥ गेनाक
आदिनीदयी, सर्वसुसयनायलं। सिद्धिगन्धर्वननिगाविद्याधनसुन
सिगा॥ दविष्ठागमलाकुरु, सिंहानागकलासन, ०० सा, नयिधि
संस्मानं, महालक्ष्मीनभाः मुने॥ ४॥ ५॥ जवृक्षयसिगादविजवृ

वृक्षानिवातिनि, जवृक्षलवसंयुक्त, जगन्नाशनभाः मुने॥ ४॥
जिननिसवरुगाना, सर्वसलपकालिहि, सर्वदूरुलादेविर्गसा
लायासकुरुनी॥ लभर्वसवलूयानिल, लभयथागनूयिनी, लभवर्षि
सिंहानं, लभवमिनिनूयिनि॥ लभवसवसा, लमु, लभवविजवृ
यिनी, वि० ०५ लमहादवि, दवदवमहासनं, शौरुलवलीषन
नीड, धानांमहामनूयिनी॥ निनाऊनमीरुंदह, महाकायमहा

सर्वे ॥ नाना रूपा समा किं नाना वक्र धनारा ॥ शिवाय न महा मज्ज
 मग्नि सूर्य समप्रहं, नृशम सो सूर्य के, दावाग्नि समग्रु ज्ञा ॥ १ ॥
 सुलं मुख दासं, उ मनु गुरु निभुं, यानि ज्ञान मूर्ये यानि, खड्ग वम
 नं भुं, पासा कु सधलं द वि, वज्र सुयिग दाधलं ॥ कपालं कलिकय
 कु गज वर्म वगु पि नं, कृकना न व दना, व्याघ्र वर्म प निवृ नं ॥ सारं काल
 स वंश, न ना ह्मि पृष्ठा सोहि नं, सिख माला धा ना दवी, क पार् न मा लि का न मं

॥

रं दाम निमहा नं, क पाले वृन्द ह बि नं, महा प्र ना स ना नित्ये, नित्ये
 सिव तद सिय ॥ सर्व नं कान खै ल्य नं, जगा वि दू त स प्र हं, वगु पि ॥ १ ॥ मि ना
 नित्ये, ज्वर कु गानि वा शा नी ॥ ज्वर मूरु सि ना द वी, ज्वर वृ क था गाना
 पिये ॥ रड विध कि ना नित्ये, रड कालि स मा वृ गा ॥ रड कान व क र्त्त नं,
 विल रड न मा मु ग ॥ १ ॥ ज नि गज नृ न, र्व व व ॥ ३ ॥ ध का ध वे न व ॥
 उल रु रं न य ॥ र्व व क वा नि रि व न्म रु धा, प्र या गो दि कृ य र्वा ज ॥ ज्वर

मू न निवा निनी ॥ संहार जेवज् जेव जेन वाचुकन मासु ग ॥ स
सुन साधिकानाथ सहस्र पास विर्यका ॥ सहकार्य विरगस्य दि
यानि कुरुमिका ॥ पसदी गुरुवा नाथ द्रुग जेवच गुरुद स पक्षि गुरु
उवा नये द्रुग प्रार्थन मासु ग ॥ **नाथ नाथ महा नाथ** जेदि नाथ महास
न ॥ **नाथ** द्वि नाथ ॥ **मीन नाथ महासन** ॥ **द्रुग नाथ** विथये दिन
नाथ महासन यत नाथ यरु गेय वगु क नाथ न मासु ग ॥ **गो ना**

धन नाथ ॥ **आन सनाथ मग मे** सफा वि सगि **अग** ॥ **जेना गाना न मा**
सु ग ॥ **सवर्ष नाथ सिद्धि ना** सगाने कन वदु य पाग सिद्धि सुथ विना
न सर्व जेन मासु ग ॥ **अक काने** द्विकान वा विकान पपथ लन ॥ स
समायग य वगु **आशाना गुन मग मे** नास यरु **अक यि ना नि** नास य
द्वि **आदवता** ॥ **नाग य सर्व नाग नि** नास यदु लदरु ग ॥ **नास यरु य**
पारिनी नास यदि य सकेने ॥ **नास यद** गिवा नादि **नाग य प्राज**

का धूर्ता नमस्तु विषंधानं नासपदविद्यानर्कानासपताकद्वि
दिनासपसर्वपाकगणायिनानागुर्मेधार्थधनधनानुविषे
लं॥ धमाथकाममाकाशिनानां यस्तुलाग्रमूर्तमिति द्वीसीद्विभाय
लक्ष्मि विद्याग्नानसूखानिय॥ वृष्टिपल्लसपृष्ठनवद्वननदिन
दिनसकाशप्रपन्ननस्यउत्पन्ननाशयस्तदा॥ नवनाकपसस्य
दिद्ययनस्तन॥ ४॥ निष्ठापिभवगानसमर्गसमाप्ता॥ ४॥

ॐ नमः श्रीसिद्धिलक्ष्मीद्वार्यनमः॥ नमस्तुदयदवशासि
द्धिलक्ष्मीमाहोजसाः प्रत्यङ्गीलामहापुत्रजननिभामुन॥ १॥ यागी
निसिद्धिलुपाधकनूनामयलुपिनिस्तनकानकनूपाधमाष्टका
पूकमध्वर्गा॥ १॥ जगत्मानसालिदेविजगत्सीदननकनानजगत्
सिक्तिकविदवीजगत्नानन्दकारनि॥ ३॥ नैकाकजननिदेवि
द्विवक्रस्यमदनीषकावापुष्टुगेलयगुदानसमायुर्ग॥ ४॥

सिद्धि लक्ष्मि महसानि वक्ष्ये कुरु विनीहि मकुरुद स
का स शुद्ध शुक्ति क स निरु ॥ १ ॥ सर्व स ग निरा देवी कलसा
न स ग ज सा ज ग कुरु निरु य का नी न क जि ग धन नि ॥ ७ ॥ विन
य य नि लाक्ष नि द स दार्द शु धालनी ख द्वा ऊ स सि भा धृ ता व ना य
लु भ द कि ॥ १ ॥ का द्य शु नै य पा सै व अरु याम लु चाम क स र्व
ल क्श न स र्व का रु म न ला दि ली क गा ॥ ८ ॥ शु क्त व स्र प वि धाना

मदि नान द ये द सा नू द क द्वा स मा लू डा नू द शु ति क स निरा ॥ २ ॥
न का ला श्री शायन सा ख द्वा कुरु ग सै य न व नु रु ग म ह सा नि द्र य
रु ग कुरु ग श्रु ति ॥ १० ॥ य ग सै ना प विष्णु मु न क न नु म हा क ला
का ठि धू लू रा दे वी क ल माने स ग ज सा ॥ ११ ॥ नाना रू प ध ना द वि
नाना स क्त व स्र सा रि गा व द्वा व कि व द्वा रू डा व द्वा पा दा म हा व ल
॥ १२ ॥ वि धन रू पा म हा सा नि ल क्ष्मि रू पा व ना न नि वि ना म नि

निरुधये विन्नीगाथरुल उदा॥१॥ शानमसाहाधुवाधुदु
दुकारं वषगानमयगमन्नामहादविममुत्रपावगाननि
॥१॥ आजाधममुष्मिन्नादविहजगैकगिनाकगि। सर्वकुलनि
सनि। जगन्माधुमवालिनि॥१॥ गनैगनैयवालेन। उक्ता। उद्धान
हृदनि। अनिसासमहाद्विहि। निद्विसाधिप्रदायनि॥१॥ यधु
सापिउसंज्ञका। ताजलक्ष्मीप्रजायग। लक्ष्मीवर्द्धयगद। दिपकै

पलमभति॥१॥ मूलपामहसानी। शवयादिसनदय। सका
दसखनवभ। सकयधुसगिहल॥१॥ उकाकनमहादवी। ह
क्ष्मीनूपायगनम। नमगमहादवी। मरा। मानमहभलि॥१॥
सर्वपापविनिमूकी। जायनागहवर्द्धनि। लक्ष्मीशकारवगु
ध्री। यासदामगगजद्वयग॥१॥ सकसागनपल्यनै। निथमा
नसकह्वेग। सकसुहादहसुवा। याधाधैगिननाभिवग

उत्तर उगदि कला, वक्रा विहीय पूजयन्, मा गृहापि नृद्वि
वक्रा सारु नला गार्थ ॥ २३ ॥ लि स्या नादी क पाप, सकल ता य वा
यय ग्री सं (अय ४ प ॥) स्मार्त उ क वि रु स मा दि ग ॥ २३ ॥ वं ध
ना म् अ ग पा र्थ, नि ग भु भू नि का नि च, भा वा स क ट श शानी,
न म् य न् मा य स व दा ॥ २४ ॥ ना लान न्य र्थ धा ल, सि रु वा द्या
हि सं क ग, वि ष भ ग रु न या क्ति, तु ग प स्मा ल ध र य ॥ २५ ॥ जं

ग म क्ता दि चू षू, य न क ला वि ना स य न्, क लि के ना पि दू
क स्य, वि ख ना स न र्थ र वृ ॥ २६ ॥ रु गा य स्मा न य का दि, पु ना दी
स न र्थ क गा, क ल वा गु र्थ सा दी नि, ना श य न् स न ना नि च ॥ २७ ॥
ज यि नि गा नि चा थानि, स दा न श र व नि ला जू ल क्रि स म नि रु
या दू ल पा लि न्द ना स नी ॥ २८ ॥ ल क्शी ष्व ला न वि र वा गा, व दू श ग
प ना व ला, म ला ल क्शी स ला का गा, स र्व सा रा ल्प दा यि नी ॥ २९ ॥

मदिलानन्दयोग न्या. मरुतु निरु. गायनि. ज्ञानन्द समरुग
नि. विष्णुरूपावगानिनी ॥३०॥ वाक्कीर्ती दिवको मा. वैष्णु विधान
धानक. माहन्दीयसि का. र्वच. निरु. काषूक मध्य गा. ॥३१॥ ज्ञान
दवि सिद्धीलक्ष्मी. सिद्धिथागिनि मध्य गा. पूज अरु वि विधा का
ना. गंध माहि वृष्य क. ॥३२॥ धूपयत्न कपून. कस्तु निवस
दिने. ज्ञानाधिगी कस्तुर्व. ज्ञाना के मपि पृजिने ॥३३॥ गजा सम

सिखाका ग. गावर्ध वनि वृद्धय. न खापुर्ण गिना लाजा जयस
र्व सदा मध्य ॥३४॥ वदना ग की मूकन. ज्ञानि गानि सिद्धि यत्
सतना तु सदा वि. दुख ज्ञानि दना सनि ॥३५॥ न मरु ग मरु
दवि लमन वि सुत्र पि नि. न मरु मुज गला ग. सिद्धि लक्ष्मी न
मा मुने ॥३६॥ ॐ निशी सिद्धि लक्ष्मी कानि समाप ॥ ॐ ॥